पाठ - 27

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर

“मेरा घर सब जगह है, मैं इसे उत्सुकता से खोज रहा हूँ।

मेरा देश भी सब जगह है, मैं इसे जीतने के लिए लडूँगा।

प्रत्येक घर में मेरा निकटतम सम्बन्धी रहता है,

मैं उसे हर स्थान पर तलाश करता हूँ।”

-गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर

शायद यह कोई तलाश ही थी कि वह अक्सर अपनी खिड़की से प्रकृति को घंटों एक टक निहारता रहता। उसे प्रकृति स्वयं से बात करती हुई प्रतीत होती। लगता जैसे खुला नीला आकाश, चहचहाते पक्षी, हरियाली, शीतल पवन और प्रकृति की हर वस्तु उसे अपने पास बुला रही है। वह कल्पना की मोहक दुनिया में खो जाता। यह दुनिया उसे बहुत ही सुंदर और मनोहारी लगती। यह उसकी प्रकृति के प्रति आकर्षण और कल्पनाशीलता ही थी कि मात्र आठ वर्ष की आयु में ही वह कविता रचने लगा। उस समय किसी ने सोचा भी न था कि बड़ा होकर यह बालक महान साहित्यकार, चित्रकार और विचारक ‘रवीन्द्र नाथ टैगोर’ के नाम से विश्वविख्यात होगा।

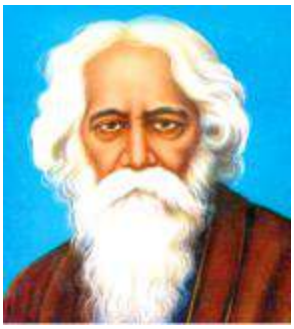

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई सन् 1861 ई0 को कोलकाता में हुआ था। इनके पिता श्री देवेन्द्र नाथ टैगोर एवं माता शारदा देवी थीं। रवीन्द्र नाथ को घर के लोग प्यार से 'रवि' कहकर पुकारते थे।

उन दिनों बच्चों के लिए मनोरंजन के कोई विशेष साधन जैसे-फिल्में, टेलीविजन, वीडियो गेम आदि न थे। इसलिए नन्हा रवि अपनी कल्पना की दुनिया में मस्त रहता जिसमें उसके मित्र, राजकुमार, जादूगरनियाँ, परियाँ व राक्षस होते। प्रकृति से रवि को इतना प्रेम था कि सुबह उठते ही वह बगीचे की ओर भागता और ओस के कणों से गीली हरी घास का स्पर्श करता। बगीचे में पत्तों पर पड़ती सूर्य की पहली किरण और ताजा खिले फूलों की महक उसका मन मोह लेती।

सन् 1868 में रवि को विद्यालय में प्रवेश दिलाया गया। उन्हें वहाँ का परिवेश अच्छा नहीं लगा। विद्यालय उन्हें कारागार जैसा लगता क्योंकि वहाँ घर की तरह खिड़की से बाहर भी नहीं देख सकते थे। पाठ उबाऊ होते। पाठ तैयार न करके आने की सजा थी सिर पर ढेर सारी स्लेटें रखकर बेंच पर खड़ा होना या बेंत की मार सहना। नतीजा बालक रवि उस विद्यालय में नहीं टिक पाया। उन्हें दूसरे विद्यालय में प्रवेश दिलाया गया। रवि के बड़े भाई हेमेन्द्र ने उन्हें पढ़ाने का दायित्व स्वयं ले लिया। उन्होंने कुश्ती, चित्रकारी, व्यायाम, संगीत और विज्ञान में विशेष रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया। कविता और संगीत ये दोनों ही गुण रवि में स्वाभाविक रूप से विद्यमान थे। रवीन्द्र ने बड़े होकर लिखा "मुझे ऐसा कोई समय याद नहीं जब मैं गा नहीं सका।"

रवीन्द्र के माता-पिता ने जब देखा कि रवीन्द्र छोटी उम्र में ही कविता रचने लगा है तो वे बहुत प्रसन्न हुए। सत्रह वर्ष की उम्र में रवीन्द्र को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया गया। वे वहाँ से लेखन, चित्रकारिता आदि में और अधिक निपुण होकर भारत लौटे।

सन् 1883 में रवीन्द्रनाथ का विवाह मृणालिनी देवी से हुआ। रवीन्द्रनाथ के पिता जी ने उनसे कहा, ''रवि, मैं सोचता हूँ अब तुम अपनी जमींदारी संभालने योग्य हो गए हो। इस विषय में तुम्हारे क्या विचार हैं ?'' रवीन्द्रनाथ इस आमंत्रण से अत्यंत प्रसन्न हुए क्योंकि वे सदा से प्रकृति के बीच रहना पसंद करते थे। वे गाँव चले गए। यह पहला अवसर था जब वे ग्रामीण जनता के इतना अधिक निकट आए। उन्होंने अनुभव किया कि भारत की प्रगति के लिए देहातों का विकास किया जाना आवश्यक है। उन्होंने महसूस किया कि ग्रामीण जनता की समस्याओं को हल करने के लिए उनकी समस्याओं की पूरी-पूरी जानकारी होना और निरन्तर प्रयास किया जाना आवश्यक है। रवीन्द्रनाथ अपने काश्तकारों से इतना प्रेम करते थे कि वे कहा करते **''हमने पैगम्बर को तो नहीं देखा लेकिन अपने बाबू मोशाय को देखा है।''** रवीन्द्र ने जब देखा कि गरीब और अशिक्षित किसान अंधविश्वासों में जकड़े हुए हैं तो उन्होंने उनके लिए एक विद्यालय खोलने का निश्चय किया।

रवीन्द्र नाथ ने पत्नी मृणालिनी से पूछा, ''हमारे पास शान्तिनिकेतन (पश्चिम बंगाल में बोलपुर के निकट) में कुछ भूमि है। वहाँ पर विद्यालय खोलने के सम्बंध में तुम्हारे क्या विचार हैं।''

''यह अत्यंत पवित्र कार्य होगा''-मृणालिनी ने सहमति व्यक्त की। इसके बाद टैगोर को छेड़ने के अंदाज में उन्होंने कहा, ''लेकिन मैंने सुना है कि आपने तो कभी विद्यालय में पढ़ना पसंद नहीं किया।''

''हाँ, सच है। लेकिन मैंने ऐसे विद्यालय को खोलने की योजना बनाई है जो चहारदीवारी से घिरा नहीं होगा।''

वास्तव में उन्होंने जिस प्रकार से विद्यालय की कल्पना की उसे साकार भी किया। आज शान्तिनिकेतन के रूप में इसी प्रकार का विद्यालय हमारे सामने है। इस विद्यालय में कक्षाएँ खुले वातावरण में वृक्षों के नीचे लगती हैं। इस विद्यालय की स्थापना में रवीन्द्रनाथ को अत्यंत संघर्ष झेलने पड़े लेकिन वे प्रसन्न थे क्योंकि यह अत्यंत शुभ कार्य था।

शान्तिनिकेतन की स्थापना के पश्चात् कई दुखद घटनाओं का ताँता लग गया। पहले रवीन्द्रनाथ की पत्नी, फिर पुत्री तथा पिता का निधन हो गया। कुछ दिनों बाद उनका छोटा बेटा भी चल बसा। रवीन्द्र ने अपने दुःख को हृदय की गहराइयों में दबाकर अपना सारा ध्यान विद्यालय चलाने में लगा दिया। उन्होंने विद्यालय में ऐसा शैक्षिक वातावरण बनाया जिसमें अध्यापक और विद्यार्थी एक साथ रहते और सभी मिल-जुलकर कार्य करते। विद्यालय का मुख्य उद्देश्य था शिक्षा को जीवन का अभिन्न अंग बनाना। शांतिनिकेतन बाद

में 'विश्वभारती विश्वविद्यालय' के नाम से विख्यात हुआ। 28 दिसम्बर, 1921 को विश्वभारती विश्वविद्यालय देश को समर्पित करते हुए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा ''यह ऐसा स्थान है जहाँ सम्पूर्ण विश्व एक ही घोंसले में अपना घर बनाता है।'' उन्होंने भारत की समृद्धि के लिए आपसी भाईचारे एवं शान्ति को आवश्यक बताया। उन्होंने गाँव की उन्नति के लिए खेती-बारी एवं पशु-पालन के उन्नत तरीकों को अपनाने एवं दस्तकारी के विकास पर बल दिया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की रचनात्मक प्रतिभा बहुमुखी थी। उनके चिंतन, विचारों, स्वप्नों एवं आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति उनकी कहानियों, कविताओं, उपन्यासों, नाटकों, गीतों तथा चित्रों में होती थी। उनके गीतों में से एक-''आमार सोनार बांगला'' बांग्लादेश का राष्ट्रीय गीत है। **उन्हीं का गीत-'जन गण मन अधिनायक जय हे' हमारा राष्ट्रगान है।** रवीन्द्र के गीतों को 'रवीन्द्र संगीत' के नाम से जाना जाता है। इन गीतों का भारतीय संगीत में विशिष्ट स्थान है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी रवीन्द्र नाथ टैगोर के व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित थे। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गांधी को 'महात्मा' कहा और गांधी ने रवीन्द्र नाथ को ''गुरुदेव'' की उपाधि दी।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को उनकी काव्यकृति ''गीतांजलि'' के लिए सन् 1913 में साहित्य का 'नोबल पुरस्कार' मिला। यह सम्मान प्राप्त करने वाले वह प्रथम एशियाई व्यक्ति थे। इस पुरस्कार में मिली सम्पूर्ण राशि उन्होंने शान्तिनिकेतन में लगा दी। 1915 में अंग्रेजों द्वारा उन्हें 'सर' की उपाधि दी गई। अप्रैल 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ। इस बर्बर हत्याकाण्ड के विरोध में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अंग्रेज सरकार द्वारा प्रदत्त 'सर' की उपाधि का त्याग कर दिया।

रवीन्द्र नाथ टैगोर मातृभाषा के प्रबल पक्षधर थे। उनका कहना था- **"जिस प्रकार माँ के दूध पर पलने वाला बच्चा अधिक स्वस्थ और बलवान होता है, वैसे ही मातृभाषा पढ़ने से मन और मष्तिष्क अधिक मजबूत बनते हैं।"**

समाज को अपने देश की महान विरासत की याद दिलाने के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय इतिहास की कीर्तिमय घटनाओं तथा प्रसिद्ध भारतीय व्यक्तियों के बारे में कविताएँ तथा कहानियाँ लिखीं। इनमें से अनेक 'कविताएँ, कथाएँ और कहानियाँ' प्रकाशित हुईं।

7 अगस्त सन् 1941 को रवीन्द्रनाथ ने अन्तिम साँस ली।

अभ्यास

1. रवीन्द्र नाथ टैगोर के बचपन की रुचि के विषय में लिखिए।
2. रवीन्द्र का मन विद्यालय में क्यों नहीं लगता था ?
3. रवीन्द्र ने गरीबों की सहायता हेतु क्या निश्चय किया ?
4. शांतिनिकेतन की स्थापना का मुख्य उद्देश्य क्या था ?
5. मातृभाषा के विषय में रवीन्द्रनाथ के क्या विचार थे ?
6. रवीन्द्रनाथ को नोबल पुरस्कार किस कृति के लिए मिला ?
7. महात्मा गांधी ने रवीन्द्रनाथ को किस उपाधि से सम्मानित किया ?
8. सही विकल्प चुनिए-

- मृणालिनी ने शान्तिनिकेतन की स्थापना का-

क. विरोध किया ख. स्वागत किया ग. कोई विचार व्यक्त नहीं किया

- रवीन्द्र नाथ ने 'सर' की उपाधि त्याग दी-

क. क्योंकि यह उनके योग्य न थी।

ख. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के विरोध में।

ग. पिता की मृत्यु से दुखी होकर।

9. घटनाओं से सम्बन्धित सही तिथि पर सही (√) का चिह्न लगाइए-

क. रवीन्द्र नाथ टैगोर का जन्म हुआ-

1860 1851 1861 1865

ख. रवीन्द्र नाथ टैगोर को नोबल पुरस्कार मिला-

1913 1914 1916 1920

योग्यता विस्तारः

'राष्ट्रगान' को नियम सहित गाने का अभ्यास विद्यालय में कीजिए। रवीन्द्र नाथ टैगोर के गीतों व कहानियों को पुस्तकालय से पुस्तक प्राप्त कर पढ़िए।